

गलिट फंड

चर्चा में क्यों?

हाल ही में गलिट फंड्स ने अन्य सभी डेब्ट फंड श्रेणियों से बेहतर प्रदर्शन करते हुए पिछले वर्ष की तुलना में 8.3 प्रतिशत का वार्षिक रटिर्न दिया है। टॉप गलिट फंडों ने रटिर्न में 11 प्रतिशत तक की वृद्धि प्रदर्शित की है।

- इसी अवधि के दौरान अन्य डेब्ट फंड्स, जो कॉर्पोरेट बॉण्ड में निवेश करते हैं, ने 4.9 प्रतिशत से 8 प्रतिशत तक का रटिर्न दिया।
- हालाँकि वर्ष 2017 तथा वर्ष 2018 की पहली छमाही में गलिट फंड्स का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा।

गलिट फंड्स क्या हैं?

- गलिट फंड वे म्यूचुअल फंड योजनाएँ होती हैं जो मुख्य रूप से सरकार की ओर से भारतीय रज़िर्व बैंक (RBI) द्वारा जारी की गई सरकारी प्रतभूतियों (G-sec) में निवेश करती हैं।
- इन सरकारी प्रतभूतियों में केंद्र सरकार की दनिौकति प्रतभूतियाँ, राज्य सरकार की प्रतभूतियाँ और ट्रेजरी/राजस्व बलि शामिल होते हैं।
- गलिट फंड्स में निवेश करने के बाद निवेशकों को किसी तरह का क्रेडिट रसिक नहीं होता है, क्योंकि इन प्रतभूतियों की गारंटी केंद्र सरकार द्वारा दी जाती है। ये फंड्स दीर्घावधि सरकारी प्रतभूतिपत्रों में निवेश करते हैं।

गलिट म्यूचुअल फंड के प्रकार

सामान्यतः गलिट म्यूचुअल फंड दो प्रकार के होते हैं-

- लघु अवधि के म्यूचुअल फंड
- दीर्घ अवधि के म्यूचुअल फंड

लघु अवधि के म्यूचुअल फंड

- लघु अवधि की योजनाओं के तहत अल्पकालिक सरकारी बॉण्ड में निवेश किया जाता है, जो बहुत कम अवधि की होती हैं।
- सामान्यतः ये म्यूचुअल फंड अगले 15-18 महीनों में परपिक्व हो जाते हैं।
- चूँकि ये फंड राज्य या केंद्र सरकार द्वारा समर्थित हैं, इसलिये इनमें कोई क्रेडिट जोखमि नहीं होता और इनकी कम अवधि में परपिक्वता के कारण ब्याज दरों में बदलाव का कम जोखमि होता है।

दीर्घ अवधि के म्यूचुअल फंड

- दीर्घ अवधि के गलिट फंड्स, दीर्घकालिक सरकारी बॉण्ड में निवेश करते हैं
- इनकी परपिक्वता अवधि 5 साल से 30 साल तक होती है।
- गलिट फंडों में सरकारी प्रतभूतियों की परपिक्वता अवधि जितनी अधिक होती है, उतनी ही अधिक ब्याज दर में बदलाव की संभावना होती है।
- कुछ मामलों में दीर्घकालिक गलिट फंड अल्पकालिक गलिट फंड्स की तुलना में ब्याज दरों में बदलाव के प्रति सक्रिय प्रतिक्रिया देते हैं।

स्रोत - बज़िनेस लाइन (द हद्दि)

